ANIMAL HUSBANDRY (पशुपालन/पशुधन)

पशुपालन क्या है?

पशुपालन शब्द का उपयोग आमतौर पर उन जानवरों को संदर्भित करने के लिए किया जाता है जिन्हें मनुष्यों द्वारा व्यावसायिक उद्देश्यों के लिए पालतू बनाया गया है।
यह क्षेत्र कृषि का एक महत्वपूर्ण उप-क्षेत्र है, जो पोषक तत्वों से भरपूर खाद्य उत्पाद, मसौदा शक्ति, जैविक खाद और घरेलू ईंधन, खाल और त्वचा प्रदान करता है, साथ ही ग्रामीण परिवारों के लिए नकद आय का एक सतत स्रोत है।

भारतीय अर्थव्यवस्था में पशुधन क्षेत्र का योगदान

रोजगार:
कृषि भारत में बड़ी संख्या में लोगों के लिए जीवनयापन प्रदान करती है जो निरक्षर और अकुशल हैं।
दूसरी ओर, कृषि, मौसमी होने के कारण, प्रति वर्ष अधिकतम 180 दिनों के लिए रोजगार प्रदान कर सकती है।
कम कृषि मौसम के दौरान लोग अपनी आय के पूरक के लिए पशुधन पर निर्भर होते जा रहे हैं।

सबसे बड़ा दूध उत्पादक: भारत दुनिया का सबसे बड़ा दूध उत्पादक देश है। देश में दूध उत्पादन 2018-19 में 6.5 प्रतिशत की वार्षिक वृद्धि दर के साथ 188 मिलियन टन था, जिसके परिणामस्वरूप प्रति व्यक्ति उपलब्धता बढ़कर 394 ग्राम प्रति दिन हो गई।

आय:
पशुधन कई भारतीय परिवारों के लिए आय का एक द्वितीयक स्रोत है, विशेष रूप से संसाधन गरीब जो जानवरों के कुछ सिर रखते हैं।
गाय और भैंस, यदि दूध में हैं, तो पशुपालकों को दूध की बिक्री के माध्यम से लगातार आय प्रदान करेंगे।
जानवर चलती बैंकों और संपत्तियों के रूप में भी काम करते हैं, मालिकों को आर्थिक सुरक्षा प्रदान करते हैं।

लगभग 20.5 मिलियन लोग जीविका के लिए पशुओं पर निर्भर हैं। सभी ग्रामीण परिवारों के लिए औसतन 14% की तुलना में पशुधन ने छोटे कृषि परिवारों की आय में 16% का योगदान दिया।पशुधन ग्रामीण आबादी के दो-तिहाई लोगों के लिए जीवनयापन प्रदान करता है। एनएसएसओ के 70वें दौर के अनुसार, 3.7% कृषि परिवारों के लिए पशुधन पालन आय का प्राथमिक स्रोत है।

भोजन: पशुधन उत्पाद जैसे दूध, मांस और अंडे पशुपालकों के लिए पशु प्रोटीन का एक महत्वपूर्ण स्रोत हैं।
2017-18 के दौरान, दूध की प्रति व्यक्ति उपलब्धता लगभग 375 ग्राम प्रति दिन है, और अंडे 74/वर्ष हैं।

सामाजिक सुरक्षा: जानवर अपने मालिकों को उनकी सामाजिक प्रतिष्ठा के आधार पर सामाजिक सुरक्षा प्रदान करते हैं। जिन परिवारों के पास जानवर हैं, खासकर जो भूमिहीन हैं, वे उन लोगों की तुलना में बेहतर स्थिति में हैं जिनके पास जानवर नहीं हैं।

लिंग समानता
पशुपालन लैंगिक समानता को बढ़ावा देता है।
पशुधन उत्पादन में श्रम की मांग का तीन-चौथाई से अधिक हिस्सा महिलाओं का है।
पंजाब और हरियाणा में, जहां डेयरी एक प्रमुख गतिविधि है और पशुओं को स्टॉल पर खिलाया जाता है, पशुधन क्षेत्र में कार्यरत महिलाओं की हिस्सेदारी लगभग 90% है।
गोबर
ग्रामीण क्षेत्रों में, गोबर का उपयोग विभिन्न प्रकार के उद्देश्यों के लिए किया जाता है, जिसमें ईंधन (गोबर केक), उर्वरक (खेत यार्ड खाद), और पलस्तर सामग्री (गरीब आदमी की सीमेंट) शामिल हैं।

पशुधन क्षेत्र द्वारा सामना की जाने वाली चुनौतियाँ-

उत्पादकता: प्रमुख चुनौतियों में से एक कृषि पशुओं की उत्पादकता में वृद्धि करना है। भारतीय मवेशी प्रति वर्ष 1172 किलोग्राम दूध का उत्पादन करते हैं, जो वैश्विक औसत का लगभग आधा ही है।

रोग: खुरपका और मुंहपका रोग, ब्लैक क्वार्टर संक्रमण, इन्फ्लुएंजा, और अन्य जैसी बीमारियों का लगातार प्रकोप पशुधन स्वास्थ्य और उत्पादकता पर नकारात्मक प्रभाव डालता है।
ग्रीनहाउस गैसें: भारत की विशाल जुगाली करने वाली आबादी ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन में योगदान करती है। शमन और अनुकूलन रणनीतियों के माध्यम से ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन में कमी एक बड़ी चुनौती होगी।

स्वदेशी नस्लों का नुकसान: विभिन्न प्रजातियों की आनुवंशिक क्षमता में सुधार के लिए विदेशी स्टॉक के साथ स्वदेशी प्रजातियों का क्रॉसब्रीडिंग केवल आंशिक रूप से सफल रहा है।
सीमित कृत्रिम गर्भाधान: गुणवत्ता जननद्रव्य, बुनियादी ढांचे और तकनीकी जनशक्ति की कमी के साथ-साथ कृत्रिम गर्भाधान के बाद कम गर्भाधान दर के कारण प्रमुख बाधाएं सीमित कृत्रिम गर्भाधान सेवाएं रही हैं।

कम ऋण: इस क्षेत्र को कृषि और संबद्ध क्षेत्रों पर कुल सार्वजनिक व्यय का लगभग 12% प्राप्त हुआ, जो कि कृषि सकल घरेलू उत्पाद में इसके योगदान से अनुपातहीन रूप से कम है। वित्तीय संस्थानों ने बड़े पैमाने पर इस क्षेत्र की उपेक्षा की है।
मांस का उत्पादन और वितरण: वध सुविधाएं अपर्याप्त हैं। अपंजीकृत, अस्थायी बूचड़खाने कुल मांस उत्पादन का लगभग आधा उत्पादन करते हैं।
पशुधन उत्पादों की मार्केटिंग और लेन-देन की लागत अधिक है, जो बिक्री मूल्य का 15-20% है।

20वीं पशुधन गणना मुख्य निष्कर्ष

देश में कुल पशुधन संख्या 536.76 मिलियन है, जो पशुधन गणना-2012 की तुलना में 4.8% अधिक है।
ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में कुल पशुधन आबादी क्रमशः 514.11 मिलियन और 22.65 मिलियन है, जिसमें ग्रामीण आबादी का हिस्सा 95.78% और शहरी आबादी का हिस्सा 4.22% है।
2019 में, कुल गोजातीय आबादी (मवेशी, भैंस, मिथुन और याक) 303.76 मिलियन है, जो पिछली जनगणना की तुलना में 1.3% अधिक है।
2019 में, देश में मवेशियों की कुल संख्या 193.46 मिलियन है, जो पिछली जनगणना की तुलना में 1.3% अधिक है।

देश की विदेशी/संकर नस्ल और स्वदेशी/गैर-वर्णित मवेशियों की आबादी क्रमशः 51.36 मिलियन और 142.11 मिलियन है।
पिछली जनगणना की तुलना में, 2019 में स्वदेशी/गैर-वर्णित मादा मवेशियों की संख्या में 10% की वृद्धि हुई।
पिछली जनगणना की तुलना में, 2019 में कुल विदेशी/क्रॉसब्रेड मवेशियों की आबादी में 29.3% की वृद्धि हुई।
पिछली जनगणना के बाद से कुल स्वदेशी (वर्णित और गैर-वर्णित दोनों) मवेशियों की आबादी में 6% की कमी आई है।
देश में भैंसों की कुल संख्या 109.85 मिलियन है, जो पिछली जनगणना से 1.1% अधिक है।
गायों और भैंसों में दुधारू पशुओं (दूध में और सूखे) की कुल संख्या 125.75 मिलियन है, जो पिछली जनगणना से 6.0% अधिक है।
2019 में, देश में भेड़ों की कुल संख्या 74.26 मिलियन है, जो पिछली जनगणना से 14.1% अधिक है।
2019 में देश की बकरी की आबादी 148.89 मिलियन है, जो पिछली जनगणना से 10.1% अधिक है।
वर्तमान जनगणना में, देश में सूअरों की कुल संख्या 9.06 मिलियन है, जो पिछली जनगणना से 12.03% कम है।
2019 में, देश में मिथुन और याक की कुल संख्या क्रमशः 3.9 लाख और 58 हजार है, जो पिछली जनगणना से 29.5% और 24.9% अधिक है।
2019 में, देश में घोड़ों और खच्चरों की कुल संख्या 3.4 लाख है, जो पिछली जनगणना से 45.2% कम है।
2019 में, देश में खच्चरों और गधों की कुल आबादी 84 हजार और 1.2 लाख है, जो पिछली जनगणना से 57.1% और 61.2% कम है।
2019 में, देश में कुल ऊंटों की आबादी 2.5 लाख है, जो पिछली जनगणना से 37.1% कम है।
2019 में, देश में पोल्ट्री की कुल संख्या 851.81 मिलियन है, जो पिछली जनगणना से 16.8% अधिक है।
देश में कुल वाणिज्यिक पोल्ट्री आबादी 2019 में 534.74 मिलियन है, जो पिछली जनगणना से 4.5% अधिक है।
2019 में देश में आवारा पशुओं और आवारा कुत्तों की कुल संख्या क्रमशः 50 लाख और 153 लाख है।

भारत का पशुधन क्षेत्र - वर्तमान स्थिति

पशुधन भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए महत्वपूर्ण है। भारत में पशुधन क्षेत्र सकल घरेलू उत्पाद का 4.35% और कुल कृषि सकल घरेलू उत्पाद का 29.35% योगदान देता है । लगभग 20.5 मिलियन लोग जीवित रहने के लिए पशुओं पर निर्भर हैं। सभी ग्रामीण परिवारों के औसत 14% की तुलना में पशुधन ने छोटे कृषि परिवारों की आय में 16% का योगदान दिया । पशुधन दो-तिहाई ग्रामीण समुदायों के लिए जीवनयापन प्रदान करता है।
भारत दूध का दुनिया का सबसे बड़ा उत्पादक और अंडे का तीसरा सबसे बड़ा उत्पादक है।
आर्थिक सर्वेक्षण-2021 के अनुसार, 2018-19 में कुल कृषि और संबद्ध क्षेत्र जीवीए (स्थिर मूल्यों पर) में पशुधन का योगदान 28.63% था।
लगभग 200 मिलियन भारतीय पशुपालन में शामिल हैं, जिनमें लगभग 100 मिलियन डेयरी किसान शामिल हैं।
देश के लगभग 80% गोवंश की उत्पादकता कम है और छोटे और सीमांत किसानों द्वारा पाले जाते हैं।
20वीं पशुधन गणना के अनुसार, देश में कुल पशुधन संख्या 535.78 मिलियन है, जो पशुधन गणना-2012 से 4.6% अधिक है।
लगभग 535.78 मिलियन पशुधन मालिकों के साथ, भारत दुनिया का सबसे बड़ा पशुधन मालिक है।

निष्कर्ष

प्रति व्यक्ति आय और शहरीकरण में निरंतर वृद्धि पशु खाद्य उत्पादों की मांग में तेजी से वृद्धि को बढ़ावा दे रही है। पशु खाद्य उत्पादों की मांग आय लोचदार है, जिसका अर्थ है कि जैसे-जैसे उनकी आय बढ़ेगी, कम आय वाले परिवार उन पर अधिक खर्च करेंगे। हालांकि शहरीकरण मांग वृद्धि का प्राथमिक कारक बना रहेगा और ग्रामीण

क्षेत्र भी पीछे नहीं रहेंगे। इसके अलावा, पशुधन उत्पादों में वैश्विक व्यापार तेजी से बढ़ रहा है, जिससे निर्यात में वृद्धि के अवसर पैदा हो रहे हैं।